स्वावलम्बिनी
swavlambini

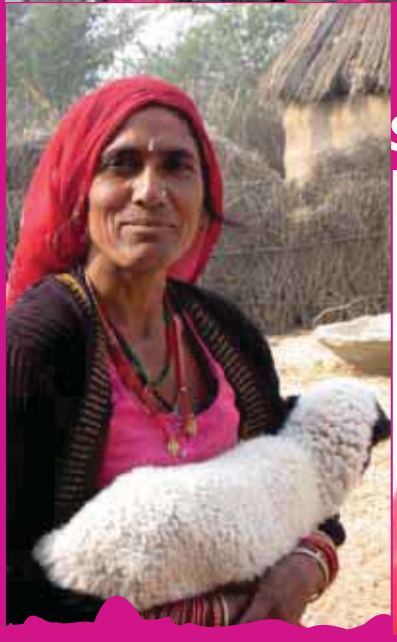

यह पुस्तिका समर्पित है महिलाओं के अजेय साहस व उनके अपने आप और अपनी एकता पर सहज विश्वास के प्रति, जो उन्हें बदलाव के संघर्ष मे जोश और हिम्मत देते हैं। और उन पुरुषों को जो बदलाव में उनके साथ हैं। और उन सभी महिलाओं व पुरुषों को भी जो बदलाव में उनका उत्साह बढ़ाते हैं।

This journal is a tribute to the indomitable spirit of women and their innate belief in self and their solidarity, which gives them confidence & a will to fight for change. And to those men who partner them in change. And also to all those women & men who support them in change.

भारत देश है विरोधाभासों का, धरती है असंगति व विरुद्धकथन की। यह महिलाओं के मामले में सबसे ज़्यादा प्रत्यक्ष है। परंपराओं व संस्कृति के अनुसार महिलाओं को पूजा जाता है पर समाज में उनकी जगह व भूमिका तय की गई है पितृसत्ता के मूल्यों के अनुसार जहां उन्हें एकदम पुरुषों के अधीनस्थ रखा गया है। संविधान गारंटी देता है सबको समान अधिकारों और भेदभाव रहित समाज की किन्तु असलियत मे समाज के अलिखित कानून जो असमानता को बढ़ावा देते हैं महिलाओं की ज़िन्दगी के हर पहलू का निर्धारण कर रहे हैं। इस विभिन्न धर्मों की धरती मे अनेक धार्मिक मतभेद हैं परन्तु सब धर्मों में एक समानता है – महिलाओं के प्रति उनके रुख की, सब महिलाओं को पुरुषों के मातहत मानते हैं।

इस बहुवर्गीय किन्तु पृथक्कारी समाज मे महिलाओं का सामाजीकरण किया जाता है प्रधानता वाली संस्कृति को मानने के लिये जिसके फलस्वरूप उसकी पालना उनका स्वीकार्य व्यवहार होता है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व विकास की प्रक्रियाओं में पितृसत्ता की मज़बूत पकड़ इनमें महिलाओं को भागीदार होने से रोकती है जबकि कानूनन इनकी भागीदारी निश्चित है। जीवन के लगभग हर क्षेत्र में पुरुष सब पर असर डालने वाले निर्णय लेते हैं।

संस्कृति से जकड़े रूढ़ीवादी पितृसत्ता से ग्रस्त समाज मे महिलाओं को जागृत करना मुश्किल काम है। भारत में असमान विकास, असमान शिक्षा का स्तर और ग्रामीण व शहरी परिस्थितियों में गहन अंतर इस समस्या को अधिक पेचीदा बनाता है। पर महिलाओं मे जागृती लाना अत्यन्त ज़रूरी है जैसे नेहरूजी ने कहा है, ''लोगों को जागृत करने के लिये महिला को जागृत करें। जब वो बढ़ती है तो परिवार बढ़ता है, गांव बढ़ता है, देश बढ़ता है।''

SCRIA एक अलाभकारी पंजीकृत संस्था है। 1979 से यह कार्यरत है दक्षिणी हरियाणा के अर्ध शुष्क व उत्तरी राजस्थान के शुष्क जिलों के गांवों में समग्र व सतत विकास के लिये। हकीकत मे सामाजिक बदलाव सिर्फ आधी आबादी की भागीदारी से नहीं हो सकता इसलिये संस्था पितृसत्ता से ग्रस्त समाज मे सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग की ग्रामीण महिलाओं के साथ काम करती है उनकी सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व विकास की प्रक्रियाओं में अर्थपूर्ण भागीदारी के लिये। संस्था इसके लिये क्षमता वर्द्धन करती है प्रशिक्षणों के द्वारा, सहायता तंत्र स्थापित करके, लिंग संवेदनशीलता के लिये समर्थक वातावरण बनाके, सामाजिक तंत्र को संस्थागत करके व घटक वर्द्धन द्वारा। पुरुषों को भी संवेदनशील बनाया जाता है महिलाओं के मुद्दों व अन्य अति महत्वपूर्ण विषयों के प्रति।

वेल्टहुंगरहिल्फ, अलाभकारी जर्मन संस्था, और यूरोपियन यूनियन SCRIA का साथ दे रहे हैं लिंग समानता को बढ़ावा देने में व उसके लिये समर्थक वातावरण बनाने के लिये। यह पुस्तिका एक प्रयास है उन बहादुर, दृढ़ संकल्पी, क्रियाशील, मज़बूत इच्छाशक्ति वाली महिलाओं को पहचान देने का जो संघर्षरत हैं पितृसत्ता वाले समाज मे महिलाओं का स्थान पुनः परिभाषित करने मे। ये असली सशक्त महिलाऐं हैं। यह हैं स्वावलम्बिनी।

India is a land of paradoxes, a land of contrasts & contradictions. This is most apparent with regard to women. Traditionally & culturally women are revered yet their place and role in society is strongly defined in accordance with the patriarchal values which places them very subordinate to men. The Constitution guarantees equal rights & non discrimination to all but in reality the unwritten laws of the society that perpetuate inequality rule every aspect of every woman's life. In this land of multi religions there are many inter-religious differences but all religions have similarity in their attitude towards women, they consider women subservient to men.

In this pluralistic yet very segregating society women are socialized into acceptance of a culture of domination with the result that the compliance thereof becomes a matter of accepted behavior. The strong patriarchal control over the social, political, economic & developmental processes effectively marginalizes the participation of women, though guaranteed in the statute books. Almost in every sphere of life men take decisions affecting all.

Awakening women anywhere in a traditionally limiting and rigid patriarchal society is a difficult thing. In India the uneven development, uneven levels of education and a sharp divide between rural & urban situations further compound the difficulties. Yet awakening women is a profound necessity as Nehruji once commented,"To awaken people, it is the woman who must be awakened. Once she is on the move, the family moves, the village moves, the nation moves".

SCRIA, Social Centre for Rural Initiatives and Advancement, is a registered non-profit organization. Since 1979 it is working in villages towards comprehensive & sustainable development in the semi arid region of southern Haryana and in arid districts of northern Rajasthan in northwest India. As true social change cannot be expected to take place with the participation of only half the population, SCRIA, in a deeply patriarchic society, works with women from socially & economically disadvantaged rural communities for their meaningful participation in social, political, economic & development processes. For this SCRIA facilitates holistic capacity building through trainings, back up support systems, enabling environment for gender sensitivity, developing multi-stakeholder partnerships, institutionalization of social systems & through constituency building. Men too are sensitized on women's issues and matters of critical importance.

Welthungerhilfe, a German non profit organization, and European Union are partnering SCRIA in promoting gender equality and in creating an enabling environment for it. This journal is an endeavor to document & recognize women who are brave, determined, strong willed, energetic, resolute & decisive in their struggle to redefine a woman's place in a patriarchic society. These are truly empowered women. They are Swavlambini.

स्वावलम्बिनी वो महिला है जो प्रधानता वाली संस्कृति को स्वीकार नहीं करती, जो इंकार करती है असमानता को मानने से या बढ़ावा देने से, अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती है और अधिकारों, हक़ व न्याय के लिये स्थानीय पहल शुरु करती है या ऐसी पहलों मे भाग लेती है। यह वो महिला है जो अपनी पहचान बनाती है, अपने भाग्य के निर्धारण मे हिस्सा लेती है व मद्द करती है अन्य महिलाओं को सशक्त करने या बदलाव का सूचक बनने में SCRIA के पहुंच वाले क्षेत्र के 800 गांव मे ज़िन्दगी बदल रही है, इस बदलाव के मध्य मे हैं स्वावलम्बिनियां, वो महिलाऐं जिन्होंने समझ लिया है कि कोई भी उनकी ज़िन्दगी मे बेहतरी के लिये बदलाव नहीं लाएगा जब तक वो खुद ऐसा नहीं करेंगी।

यह बदलाव विस्तृत व विविध है जिसमे महिलाऐं सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व विकास की प्रक्रियाओं में अपने जायज़ अधिकार व हक़ लेती हैं। यह बदलाव संख्यायों में नहीं दिखता, यह हिस्सा है उनकी हर रोज़ की ज़िन्दगी का व उस समाज का जिसमे वो रहती हैं। यह बदलाव दिखता है महिला संगठनों व उनके स्वयं सहायता संघों में, सूक्ष्म बचत व ऋण में, सूक्ष्म उद्यमों में, स्थानीय शासन की प्रक्रियाओं मे महिलाओं की भागीदारी में, हिंसा के विरुद्ध न्याय के लिये महिलाओं की लड़ाई की एकल कहानियों में और किसी को भी महिलाओं के अधिकार व हक़ को कुचलने नहीं देने के लिये उनके नेतृत्व में किये गए स्थानीय पहलों में।

इन बदलावों का मतलब यह नहीं है कि इन गांवों में महिलाओं का उद्धार हो गया है। महिलाओं के समुख समस्याऐं अत्याधिक हैं, वास्तविकता जटिल और संस्कृति व परम्परा का भारी दबाव जो बदलते हुए लिंग सम्बन्धों की वजह से और भी पेचीदा हो गया है। यह बदलाव शुरुआत के सूचक हैं, यह अग्रदूत हैं अर्थपूर्ण व महत्वपूर्ण बदलावों के जो बस आ ही रहे हैं। यह बदलाव उस भविष्य का बताते हैं जिसमे महिलाओं की उपेक्षा करना सम्भव नहीं होगा या जिसमे उन्हें ज़ब्रदस्ती पुरुषों की छत्र छाया में सिर्फ़ चौका व घर तक सीमित नहीं रख सकेंगे।

यह बदलाव आसान नहीं थे और कितनी ही बार इनकी नेत्रीयों को इसके लिये भारी कीमत चुकानी पड़ी है। अनेक जोखिम उठा कर व त्याग दे कर स्वावलम्बिनियों ने न्याय हासिल किया है, अपनी बात रखी है और एक परंपरागत रूढ़ीवादी व सीमित समाज मे शुरुआत की है। इनके द्वारा उठाए गए कष्ट अनेक हैं जैसे छोटे बच्चे को ज़िदा जलाना, परिजनों का अपहरण व निर्मम पिटाई। इस सबसे कोई भी साधारण महिला या पुरुष अपना मानसिक संतुलन खो देता या संघर्ष छोड़ देता। परन्तु स्वावलम्बिनियों ने नहीं जिन्होंने प्रण लिया है न्याय व गरिमा के लिये संघर्ष करने का। इस पुस्तिका मे राजस्थान के चुरु जिले के कुछ गांवों की कुछ स्वावलम्बिनियों की कुछ पहलों के बारे में बताया है जो 2010 से 2012 में की गईं हैं।

Swavlambini is a woman who chooses to reject a culture of domination, who refuses to accept and perpetuate inequality, raises her voice against injustice and initiates or participates in local initiatives for rights, entitlements & justice. She is a woman who carves her own identity, is instrumental in influencing her destiny and helps other women to be empowered & become change agents. In SCRIA's outreach of more than 800 villages life is changing, and at the core of this change are Swavlambinis', women who have understood that nobody is going to initiate change for their betterment unless they do so themselves.

This change is wide & varied with women seeking their rights & fair entitlement in social, political, economic and developmental processes. This change is not reflected in numbers, its part of their everyday lives and in the society they live in. This change manifests itself in women groups' & their self help federations, micro savings & credit, micro enterprises, women's participation in local governance processes, individual stories of women fighting for justice against violence and in women led local initiatives for not letting anyone trample over their rights & entitlements.

These changes do not mean that emancipation of women has been achieved in these villages. The problems facing women are too many, the reality complex and the pull of culture & tradition very strong which is further compounded by changing gender relations. The changes happening indicate a beginning; they are harbingers of meaningful vibrant changes that are around the corner. The changes foretell a future in which it will be no longer possible to ignore women or relegate them by force to be just bread makers & child bearers under the omni dominance of men.

The changes have not been easy and many a times the cost has been heavy on the protagonists. Against great odds and personal sacrifices Swavlambinis have sought justice, made their voices heard and above all have made a beginning in a traditionally conventional & limiting society. The hardships endured by the protagonists cover a wide range of malice from the burning of a child to abduction & brutal beatings, which would have made an ordinary man or woman loose its sanity and abandon the struggle. But not Swavlambinis who have resolved to fight for equality and dignity. In this journal SCRIA is sharing some of the initiatives of some of the Swavlambinis from some of the villages in Churu district of Rajasthan that were undertaken during 2010 to 2012.

आपा भी राज करालाएं

भारत मे नागरिकों के द्वारा इच्छित शासन की नई धारणा ऐसी प्रक्रियाओं के बारे मे है जो खुली, पारदर्शित व सम्मिलित हों। सरकार ने कुछ पहल की हैं इस दिशा मे किन्तु उनके ज़्यादातर साथी व कर्मचारी इसके प्रति उदासीन हैं। इस स्थिती का मज़बूत तोड़ है नागरिकों द्वारा पहल व नागरिकों की बुलन्द आवाज़। स्वावलम्बिनियां यही सब कर रही हैं। वह निरंतर सरकार व सरकारी तंत्र के साथ जूझती हैं अपने अधिकार, हक़ व न्याय के लिये।

निश्चित दिन, समय व जगह रमेश 35 महिलाओं के साथ अपने गांव छाजूसर, ब्लाक रतनगढ़, से भरपालसर गांव ग्राम सभा के लिये पहुंची। जब वहां कोई भी नहीं मिला तो उन्होंने सरपंच से सम्पर्क किया जिसने उन्हें कहा कि घर मे कुछ काम होने की वजह से आज ग्राम सभा आयोजित नहीं होगी। रमेश ने तुरन्त ब्लाक अधिकारी से ग्राम सभा के बारे मे सम्पर्क किया परन्तु उसने यह कह के पल्ला झाड़ लिया कि वह छुट्टी पर है।

शासन की मूल व सबसे सम्मिलित इकाई ग्राम सभा के प्रति ऐसे अवहेलनात्मक रुख से आश्चर्यचकित उन्होंने जिला कलेक्टर को फ़ोन किया जिन्होंने उनकी बात सुनी व कार्यवाही का भरोसा दिलाया। कुछ ही मिनटों मे ब्लाक अधिकारी ने रमेश को फ़ोन कर ग्राम सभा के लिये महिलाओं के साथ रुकने का निवेदन किया। आधे घण्टे के भीतर सरपंच, ब्लाक अधिकारी व दो अन्य पंचायत अधिकारी भरपालसर पहुंचे व ग्राम सभा आयोजित की। पहली बार महिलाओं द्वारा उठाए सारे मुद्दों पर ग्राम सभा मे चर्चा हुई व कार्यवाही के लिये चिन्हित किये गए। वहां मौजूद सरपंच व अधिकारियों ने वादा भी किया कि वह भविष्य मे नियिमित रूप से ग्राम सभा आयोजित करेंगे।

कुछ समय बाद गांव मे पानी का पम्प खराब हो गया, जब महीने भर बाद सरपंच ने अधिकारियों से जल्दी काम करवाने मे अपनी लाचारी बताई तब रमेश 52 लोगों के दल के साथ जलदाय विभाग के उपखण्ड कार्यालय गईं। वहां उन्होंने धरना प्रदर्शन किया। थोड़े समय बाद उपखण्ड अधिकारी ने उन्हें 24 घण्टे के भीतर कार्यवाही का आश्वासन दिया। एक ही दिन मे पम्प की मरम्मत की गई व पानी सप्लाई बहाल हुई। रमेश से अब उनके व आस पास के गांव के लोग अक्सर सलाह या मद्द लेते हैं। चाहे मुद्दा घरेलू हिंसा का हो, गांव के स्वास्थय केंद्र मे अनुपस्थित नर्स का, स्कूल टीचरों द्वारा गैर अधिकारिक चंदा उगाही का, ग्राम सभा मे महिलाओं की भागीदारी से सम्बंधित, महिलाओं को सामान वेतन या फ़िर जन कार्यों मे अनियमितता व लापरवाही का, रमेश बेझिझक साथ देती हैं।

We will also rule

In India the new governance paradigm desired by citizens is about processes that are open, transparent and inclusive. The state has taken some initiatives in this direction but its players are mostly unresponsive towards it. The antidote to this state of affairs is citizens' action and strong civic voices. Swavalambinis are providing just that. They constantly engage state actors for their rights, entitlements & justice.

On the designated day, time & place Ramesh along with 35 other women from her village Chajusar, of Ratangarh block, reached Bharpalsar village for Gram Sabha. Not finding anyone there she contacted Sarpanch who told them that Gram Sabha would not be held as he had some work at home. Ramesh immediately contacted block officer about Gram Sabha but he shrugged off the matter saying he is on leave. Flabbergasted with such cavalier attitude towards the basic and most inclusive unit of governance she phoned district Collector who gave her a patient hearing and assured her of action. In few minutes the block officer phoned Ramesh requesting her to wait with other women for Gram Sabha.

Within half an hour Sarpanch, district officer and two other Panchayat officials reached Bharpalsar and facilitated the Gram Sabha. For the first time all the issues raised by women in Gram Sabha were attended to & noted for action. Sarpanch & the officials also promised regular Gram Sabha meetings in future.

Some time later village's water pump broke down and when after a month Sarpanch expressed his inability in coaxing the officials to hurry up with repairs Ramesh led a delegation of 52 to subdivision office of waterworks department. There they staged a sit-in protest demonstration. After a while the subdivision officer met them and assured action with in 24 hours. Within a day the water pump was repaired and water supply restored. Ramesh is now frequently consulted or her help is sought by people in her village & other neighboring villages. Whether the issue is about domestic violence, absentee nurse in village health center, unofficial fund collection by school teachers, functioning of day care center, women's participation in Gram Sabhas', equal wages for women or irregularities & deficiency in public works Ramesh unhesitatingly assists.

अब खामोश नहीं रहना है

स्वावलम्बिनियों के लिये स्थानीय पहल एक नियमित कार्य है चाहे मुद्दा शासन में सम्मिलन का हो, महिला हिंसा के विरुद्ध हो, सार्वजनिक संपत्ति के प्रबंधन की बात हो या जन सेवाओं व स्कीमों मे जवाबदेही का। आनंद के गांव काकलासर, सरदारशहर ब्लाक, में एक जन स्कीम के तहत उपचारित पानी सप्लाई होता है जिसके लिये गांव वाले मासिक शुल्क देते हैं। पानी गांव के सार्वजनिक स्थलों में लगाऐ सार्वजनिक नलों के द्वारा मिलता है व पूरे गांव का एक बिल होता है। पंचायत ने परिवार में जन व पशु के आधार पर प्रति परिवार मासिक शुल्क निर्धारित किया हुआ है। कुछ समय तक सब ठीक था पर 2011 मे कुछ रसूक वाले परिवारों ने सार्वजनिक नलों से अपने घरों तक पाईप बिछा ली। इससे पानी की खपत बढ़ी, पानी अधिक बर्बाद होने लगा व पानी का बिल लगातार बढ़ता गया। आनंद ने सार्वजनिक रूप से देय इस सम्पदा का कुछ परिवारों द्वारा दुरुपयोग का विरोध किया परन्तु उल्टा उन्हें ही धमका दिया गया। निडर, उन्होंने पीड़ित परिवारों को इसके विरोध मे संगठित किया। सबने मिलकर तय किया कि वे पानी का शुल्क नहीं देंगे जब तक इस मुद्दे का सामाधान नहीं होता। ज़्यादातर परिवारों द्वारा मासिक शुल्क नहीं देने पर बिल भी नहीं भरा गया जिसके फ़लस्वरूप पानी का कनेक्शन कट गया। जल्दी ही गांव में बैठक हुई व आनंद ने पूरी बात सबके सामने रखी। काफ़ी चर्चा के बाद तय हुआ कि जो परिवार घर मे पानी का कनेक्शन लेना चाहते हैं वह दुगना मासिक शुल्क देंगे और जो कोई पानी बर्बाद करता मिला उसे 500 रुपये का दण्ड देना होगा। कुछ ही दिनों मे पानी की सप्लाई बहाल हो गई व पानी की बर्बादी भी लगभग रुक गई है।

अगस्त 2010 मे "प्रशासन नागरिकों के लिये" अभियान के दौरान आनंद ने देखा कि जन अधिकारी केवल उन अर्ज़ीयों पर कार्यवाही कर रहे हैं या उन लोगों को जन कल्याण स्कीमों का लाभ दे रहे हैं जो एक ख़ास राजनितिक दल से सम्बंध रखते हैं। इन्होंने तुरन्त इसका विरोध किया, अन्य महिलाऐं भी इनके साथ हो गईं। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए अधिकारियों ने तुरन्त पात्रता के आधार पर लाभ देना चालू किया। आनंद प्रधानता वाली संस्कृति जो असमानता को बढ़ाती है को पराजित करने के लिये वचनबद्ध है व बिना रुके उसे साकार करने में लगी हुई हैं।

Now won't keep quiet

For Swavlambinis initiating local action is a norm whether it is for inclusiveness in governance, against gender violence, management of community assets or accountability in public services & schemes. In Anand's village Kakalsar, Sardarshahar block, treated water is supplied under a public scheme for which the residents have to pay a monthly charge. The water is distributed from public taps in public areas of the village and is billed for the whole village. Panchayat has fixed charges as per the number of persons & livestock in a household. For some time all was well but in 2011 some influential families fixed pipelines from the public taps to their homesteads. This inevitably led to increased consumption, water wastage & an ever increasing water bill. Anand protested against this misuse of a commonly paid resource, but was told to shut up. Undaunted, she organized people for action from among the suffering families in the village. All decided to stop paying the monthly water charge till the matter was fairly resolved. Non payment of charge by the majority led to bill payment default & water supply was disconnected. Soon a village meeting was held in which Anand explained the entire situation. After much discussion it was resolved that all those who want to opt for home based supply must pay double charge and anyone found wasting water would pay a penalty of Rs.500. Soon water supply was restored and since then water wastage has nearly stopped.

In August 2010 during the campaign 'administration for citizens' Anand realized that public officials are processing requests and providing benefits of welfare schemes only to those people who were aligned with a particular political party. She immediately protested, other women too joined in. Realizing the gravity of the situation the officials immediately backtracked and started processing benefits as per the criterion. Anand's commitment to overcome a culture of domination that perpetuates inequality continues unabated.

हक री खातिर लड़नो है

एक बार फ़िर जब जन वितरण प्रणाली के डीलर ने अनाज कोटे से बहुत कम दिया तो चंद्रावली ने विरोध किया। कई महीनों से उन्हें अपना हिस्सा पूरा नहीं मिल रहा था, पर उनके चुरु ब्लाक के सूरतपुरा गांव मे यह एक ऐसी पुरानी सम्स्या थी जिसमे हमेशा कुछ लोगों को उनके हिस्से का सस्ता अनाज पूरा नहीं मिलता था। चंद्रावली ने पंचायत को इस चोरी की शिकायत की पर कोई फ़र्क नहीं पड़ा। यह भी कोई नई बात नहीं थी क्योंकि चंद्रावली और ज़्यादातर लोग जिनके साथ डीलर लगातार धोखाधड़ी करता था वह सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े समुदाय से थे जबकि डीलर उस समुदाय से नहीं था व उसके पास राजनैतिक रसूक भी था, इसलिये पंचायत कभी उसके खिलाफ़ शिकायत पर ध्यान नहीं देती। चंद्रावली का सब्र खत्म हो गया। उन्होंने बार बार ग्राम सभा में भी यह मुद्दा उठाया किन्तु कुछ नहीं बदला। इन्होंने फ़िर मई 2011 मे सूचना के अधिकार कानून के तहत अर्ज़ी देकर जानकारी मांगी कि इनके गांव में बांटने के लिये कितना अनाज दिया गया था, कितने परिवारों के लिये व प्रति व्यक्ति निर्धारित मात्रा क्या है। अर्ज़ी दर्ज़ करने के हफ़्ते भर के अन्दर ही डीलर चंद्रावली के पास भागा हुआ आया, उनसे कम राशन देने की माफ़ी मांगी, वादा किया पिछले छह महीने के बकाया राशन देने का व कभी उन्हें व किसी अन्य महिला से धोखा नहीं करने का। उसने फ़िर चंद्रावली से अर्ज़ी वापिस लेने की याचना की। तब से चंद्रावली व गांव के अन्य लोगों को निर्धारित राशन बिना किसी समस्या के मिल रहा है, कभी कभार जब डीलर अपने पुराने तरीके फ़िर से चालू करने लगता है तब चंद्रावली और अन्य महिलाऐं उसे याद दिला देती हैं कि वह ऐसे करने पर क्या कदम उठाऐंगी।

इस घटना के बाद से गांव की पंचायत व अन्य निर्णयकार जल्दी से चंद्रावली और अन्य महिलाओं की बात को खारिज नहीं करते। वे इन महिलाओं द्वारा उठाए मुद्दों पर कार्यवाही करते हैं। चंद्रावली वाले गांव के हिस्से में चंद्रावली और अन्य महिलाओं के कहने पर पंचायत ने पीने के पानी की टंकी बनवा दी है, सालों पुराने कीचड़ भरे मुख्य रास्ते को ठीक करवा दिया है व गंदा पानी जो स्कूल के मैदान में भरा रहता था उसकी निकासी का प्रबन्ध कर दिया है। गांव मे चंद्रावली और अन्य महिलाओं की लड़ाई अपने हक व गरिमा के लिये जारी है।

Have to fight for rights

When once again the Public Distribution System dealer did not give her the due amount of grains Chadrawali protested. For many months she was not getting her fair share, though in her village Suratpura of Churu block it was an ongoing grouse as few were always deprived of their share of subsidized grains. Chandrawali complained to the Panchayat about the kleptocracy, but to no avail. This too was nothing new as Chandrawali and most of the others who were regularly cheated by the dealer belonged to a socially disadvantaged community while the dealer did not and he also had political patronage, hence the Panchayat never paid any heed to complaints against him. For Chandrawali enough was enough. She had repeatedly raised the matter in Gram Sabha too but nothing had changed. So, in May 2011 she filed an application under Right to Information Act seeking information on how much grain was released for distribution in her village, to how many families and what was the quantity fixed per person. Within a week of filing the application the dealer rushed to Chandrawali, apologized for shorting rations, promised to give her the balance amount of grains due for the last six months and never cheat her or other women. He then requested her to withdraw the application. Since then Chandrawali & others in her village have been receiving their due amount without too much fuss; though at times the dealer tries to slip back to his old modus operandi but Chandrawali & other women from her group remind him of the potential action they may take.

Since this incident the village Panchayat & other "decision makers" are not so swift in dismissing Chandrawali & other women. They attend to the issues raised by these women. In Chandrawali's corner of the village, as per the request of Chandrawali & others the Panchayat has now made provision for drinking water by constructing a tank, taken care of years old problem of water logged main path and have made an outlet for dirty water that use to flood the school ground. Chandrawali & others' fight for their just rights & dignity in the village goes on.

गरिमा और न्याय का हक़

7 अक्तूबर 2011 को प्रेमलता अपने गांव पुनसीसर से पास की ढाणी में पैदल जा रही थी। सुनसान इलाके से गुज़रते हुए उन्होंने एक महिला को पानी से भरे तालाब की तरफ़ बेताहशा भागते देखा। इससे पहले वह महिला तलाब मे कूदती प्रेमलता ने उसे पकड़ लिया और घसीट कर दूर ले गई। थोड़ा शांत होने पर महिला ने ससुराल मे घरेलू हिंसा व प्रताड़ना से भरी अपनी ज़िन्दगी की कहानी सुनाई। प्रेमलता ने उस महिला के रिश्तेदारों को फ़ोन करके वहां बुलाया। उस दुखी महिला के पति, ससुर व जेठ तुरन्त आए और आते ही उन्होंने उस महिला व प्रेमलता को कोसना चालू कर दिया। प्रेमलता ने शांति परन्तु दृढ़ता से उन लोगों को चुप होकर सुनने के लिये कहा। फ़िर उन्होंने उन को घरेलू हिंसा के कानूनी व सामाजिक नतीजों के बारे में बताया। उन्होंने विस्तार से यह भी बताया कि कैसे शक्ति परिषद, महिला नेत्रियों का संघ जो हिंसा पीड़ित महिलाओं की सहायता करता है, प्रताड़ित करने वालों के साथ निपटता है। शुरु में पुरुषों ने उन्हें धमकाने की कोशिश की परन्तु वह जल्द ही समझ गए कि प्रेमलता सच बोल रही हैं। आखिर उन्होंने वादा किया कि अब उनका व्यवहार उचित होगा और वह प्रताड़ना बंद करेंगे। प्रेमलता ने उस दुखी महिला को उसके ससुराल छोड़ा, अपना फ़ोन नम्बर दिया व पड़ोसियों को कहा कि प्रताड़ना चालू होने पर उन्हें फ़ोन करें। तब से 15 महिने हो गए हैं और सब शांत है।

प्रेमलता को स्वावलम्बिनी हुए पांच साल से ऊपर हो गए हैं और वह सक्रिय रूप से हिंसा पीड़ित महिलाओं की सहायता व महिलाओं के अधिकार व जायज़ हक के लिये पहल करती हैं। यह शुरुआत 2007 में इन्होंने अपने गांव मे महिला संगठन बना कर की। तब से इन्होंने अपने संगठन की सदस्याओं के साथ मिलकर अनेक स्थानीय पहल की हैं। सितम्बर 2011 मे जब नरेगा के अंतर्गत पूरा काम करने पर कानूनी रूप से तय मज़दूरी से भी कम का भुगतान किया गया तब प्रेमलता ने विरोध किया। ब्लाक स्तर पर सम्बन्धित अधिकारियों ने इनकी शिकायत यह कह कर खारिज कर दी कि गांव वाले घटिया काम करते हैं तभी पैसे कम दिये हैं। इस बात से नाराज़ प्रेमलता ने साथी महिला कर्मियों को बिलकुल नियमानुसार काम करने को कहा व खुद किये हुए काम का हिसाब रखने लगी। ऐसी स्थिति मे सम्बन्धित अधिकारियों को कानून अनुसार कर्मियों को पूरा भुगतान करना ही पड़ा। यह एक किस्म का रिकार्ड था क्योंकि गांव मे डेढ़ साल से चल रहे रोज़गार कार्यक्रम में पहली बार मज़दूरों को पूरा जायज़ भुगतान मिला था। प्रेमलता गांव के शासन व विकास की प्रक्रियाओं में सक्रिय है, वह इनमे महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिये मेहनत व लगन से प्रयास करती हैं।

Right to dignity & justice

On October 7th 2011 Premlata of Punsisar village in Sardarshahar block was walking to a nearby hamlet. On her way through a lonely stretch she saw a woman running pell mell towards a pond full of water. Before this distraught woman could jump in Premlata caught her & dragged her away from the pond. Upon being comforted the woman narrated her tale of continuous domestic violence & abuse in her marital home. Premlata called woman's relative over the phone. Soon the distraught woman's husband, father in law & brother in law came and immediately started abusing her and Premlata. Premlata calmly but very authoritatively told them to shut up and listen. She told them about legal & social repercussions of domestic violence. She also detailed how Shakti Parishad [a federation of women leaders' that helps women victims of violence] deals with abusers. Initially, the men tried to bluster it out but soon they realized that Premlata meant what she said. At long last they promised to behave sensibly and stop the abuse. Premlata then accompanied the distraught woman to her marital home, gave her phone number to the victim & her neighbors with instructions to call her if the abuse starts. Since then it has been 15 months and all is peaceful.

Premlata has been a Swavlambini for more than five years now and is very proactive in helping women victims of violence and in leading initiatives for seeking women's rights & just entitlements. She started by organizing a women's group in her village in 2007. Since then she has led many local initiatives in her village, with the support of her group members. In September 2011 Premlata protested against the less than statutory payment of wages for the work done under National Rural Employment Guarantee program. The concerned officials at block level dismissed her complaint citing "deplorable work by villagers" as a reason for less payment. Incensed, Premlata urged fellow women workers to be punctilious in their work and started keeping track of progress record of work done. Confronted with such a situation the concerned officials were forced to pay women the statutory wage in full. This was a record of sorts for in the one & a half years of employment program in the village this was the first time that the workers received their full due payment. Premlata is active in village governance & other development processes too and assiduously promotes the participation of women in them.

मनमानी नहीं करने देंगे

जुलाई 2011 में मानसून की भारी बारिश से बुकलसर गांव में आने जाने के सारे रास्ते बंद हो गए क्योंकि गांव पहुंचने के सारे रास्ते व सड़कें निचले इलाके में थे। गांव आने जाने वाले हर किसी को घुटने तक के गंदे पानी से गुज़रना पड़ता था। जब दो हफ़्ते तक भी पंचायत ने रास्ता साफ़ करवाने के लिये कोई कदम नहीं उठाया तब अनुसुईया अपने महिला संगठन की 33 महिलाओं के साथ सरपंच के पास गई। सरपंच ने कुछ भी करने से साफ़ मना कर दिया क्योंकि उसे वह कोई समस्या नहीं लगी। अनुसुईया फ़िर विकास अधिकारी के पास गई, परन्तु अधिकारी ने भी कुछ नहीं किया। ऐसी उदासीनता से तंग हो कर वह अपने क्षेत्र के विधायक से मिली और गांव की समस्या से उन्हें आवगत कराया। विधायक ने तुरन्त सरपंच व अन्य अधिकारियों को निर्देश दिये समस्या का समाधान करने के लिये और चेतावनी भी दी कि वह महिलाओं के साथ तमीज़ से पेश आऐं। जल्दी ही रास्तों से पानी निकाल दिया गया, गड्ढे भर दिये गए व रास्ते समतल हो गए।

यह अनुसुईया की कोई पहली पहल नहीं थी सबके अच्छे के लिये, न ही यह पहला मौका था जब उन्हें सत्ता में काबिज़ लोगों के मनमाने व्यवहार का सामना करना पड़ा। वह छह साल से स्वावलम्बिनी थी और उन्हें कई बार दूसरों के भले के लिये लोगों से उलझना पडता़ था। न्याय की खोज मे वह कभी भी पीछे नहीं हटी, अत्यन्त सामाजिक दबाव के चलते भी नहीं। जब बुकलसर गांव की लड़की, जिसकी शादी अनुसुईया के दूर के रिश्तेदार से हुई थी, को पति ने सांवले रंग होने की वजह से छोड़ दिया तब अनुसुईया ने उसकी मद्द करने की ठानी। उन्होंने उस लड़की के पति व ससुराल वालों को समझाने की कोशिश की। जब वह बिलकुल भी नहीं माने तब अनुसुईया ने उनके खिलाफ़ केस दर्ज कर दिया परित्याग, क्रूरता व भरण पोषण सहायता के लिये। इसके तुरन्त बाद ही अनुसुईया के माता पिता व दूसरे रिश्तेदारों ने उन पर केस वापिस लेने के लिये दबाव डाला अन्यथा सारे रिश्ते तोड़ देने की धमकी दी। अनुसुईया ने इंकार कर दिया व लगन से मामले को सही अंजाम तक पहुंचाया।

हाल ही मे अनुसुईया ने स्कूल से निकले बच्चों के मुद्दे पर पहल की। इन्होंने महिला संगठन की सदस्याओं के साथ गांव मे स्कूल छोड़े हुए बच्चों का सर्वेक्षण किया व पाया कि 11 लड़कियां व 10 लड़के स्कूल नहीं जा रहे हैं। अनुसुईया संगठन सदस्याओं के साथ इन बच्चों के माता पिता से मिलीं व उन्हें प्रेरित किया बच्चों को स्कूल में वापिस दाख़िल करने के लिये। 15 बच्चे फ़िर से स्कूल में हैं व बाकी बच्चों के माता पिता के साथ प्रयास जारी हैं। अनुसुईया हमेशा व्यस्त रहती हैं समानता, न्याय और विकास व शासन की प्रकियाओं को सम्मिलित व जवाबदेह बनाने की खोज मे।

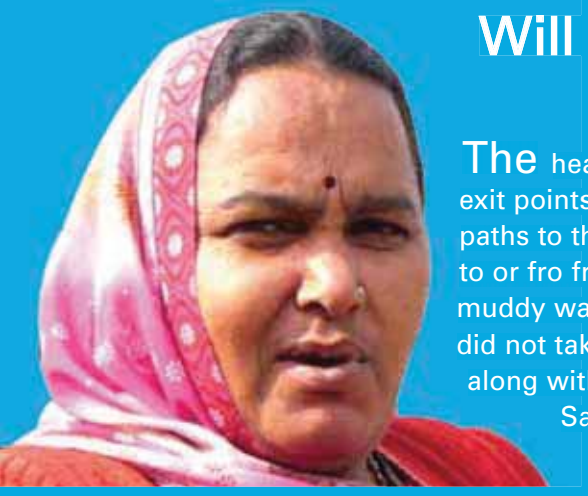

Will not allow willful behavior

The heavy monsoon rains in July 2011 cut off all entry exit points and marooned village Bukalsar as all roads & paths to the village lie in low lying area. All those traveling to or fro from the village had to wade through knee deep muddy waters. When after couple of weeks the Panchayat did not take any action to get the path cleared Anusuiya along with 33 women group members approached Sarpanch. But he categorically refused to do anything as he did not consider it a problem. Anusiya then approached the development officer, but he too did not deliver. Fed up with such apathy she then met the local MLA and narrated her village's woe. The MLA immediately ordered Sarpanch & other officials to attend to the problem & warned them to behave properly with women. Soon the water was pumped out, potholes filled & the paths leveled.

This was not Anusuiya's first initiative for common good nor was it her first brush with high handed behavior from people in position of power. She has been a Swavlambini for 6 years and in that time she has locked horns with many for the good of others. In her quest for justice she has never backed down, even under immense social pressure. When a young woman from Bukalsar village, married to a distant relative of Anusuiya, was abandoned by her husband because of her dark complexion Anusuiya resolved to help her. She tried to reason with the husband & his family. When they did not budge from their stand Anusuiya filed a case for abandonment, cruelty and maintenance support. Soon enough, Anusuiya's parents & other relatives insisted that she withdraw the case or they will break all relation with her. Anusuiya refused & diligently pursued the matter to its logical conclusion. Recently, Anusuiya took up the issue of children who dropped out of school. She along with other members of women's group did a survey & found that 11 girls & 10 boys in their village were out of school. Anusuiya with group members met the parents of the concerned children & persuaded them to reenroll their children in school.15 children are back in school & the parents of rest are being persuaded to follow suit. Anusuiya is always engaged in the pursuit of equality, justice and for accountability & inclusiveness in development & governance processes.

सम्पत्ति पर हमारा भी अधिकार है

पेपा व उसके बेटे को 17 साल पहले उसके पति की मौत के बाद ससुराल से निकाल दिया गया। वह वापिस अपने माता पिता के घर रतनगढ़ ब्लाक के सुलखनियां गांव में आ गई और जीवनयापन के लिये मज़दूरी करने लगी। 2007 मे वह SCRIA द्वारा गठित गांव मे महिला संगठन से जुड़ गई और विभिन्न क्षमता वर्द्धन कार्यक्रमों में हिस्सा लेने लगी। 2010 मे जब उन्होंने महिलाओं के सम्पत्ति के अधिकार के बारे में जाना तो अपनी व्यथा संगठन में बताई व साथियों से हक़ लेने के लिये सहयोग मांगा। कुछ दिनों के बाद वह अपने ससुराल सीकर जिले के बालोदी गांव चली गई। वहां थोड़े दिनों के बाद उनके ससुराल वालों ने रात दिन तंग करना चालू कर दिया। पेपा गांव की पंचायत के पास गई परन्तु उन्होंने परिवार का आपसी मामला कह कर पल्ला झाड़ लिया। वह, संगठन की सदस्याओं के साथ, फ़िर जिला संरक्षण अधिकारी से मिली व न्याय की मांग की। जल्दी ही पेपा को अपने दिवंगत पति के हिस्से का मकान व खेत मिला परन्तु ससुराल वालों ने उन्हें नित नए ढंग से रोज़ परेशान करना चालू कर दिया। पेपा ने इस स्थिति का मुकाबला दृढ़ता से किया, वह बेमानी बातों को नज़रअंदाज़ करती परन्तु अपने जायज़ हक के लिये मुकाबला करती रही। एकदम विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी हिम्मत और हार न मानने वाले जज़्बे ने उन्हें नायिका बना दिया है दुःख झेल रही महिलाओं का जो उनके पास सुझाव व सहायता के लिये आती रहती हैं। पेपा बिना हिचक मदद् करती हैं उन सब की जो उनके पास आते हैं।

Pepa and her son were turned out of her marital home 17 years ago when her husband died. She returned to her parents' home in village Sulakhniya of Ratangarh block and took up wage labor for livelihood. In 2007 she joined SCRIA facilitated women's group in the village & got involved in various capacity building events. In 2010 when she learned about property rights of women she shared her plight with her group & sought their support in the matter. Soon she left for her marital home in village Balodi of Sikar district. There, after few days her late husband's family started harassing her constantly. Pepa approached the village Panchayat but they shrugged it of as a 'family matter'. She, along with her group's members, then met district protection officer and sought justice. Soon she was given her late husband's fair share of house & fields but her husband's family continued to harass her with ever new innovative ways. She learnt to deal with the situation resolutely; she ignored the inconsequential but fought for what was rightfully hers'. Her tenacity & resolve against overwhelming odds has made her a heroine among women in distress who flock to her for advice & support. Pepa indefatigably helps all who approach her.

We also have rights over property

रतनगढ़ ब्लाक के हुडेरा गांव की बिमला कर्मठता से महिलाओं के सम्पत्ति के अधिकार की वकालत करती हैं। एक पारिवारिक स्थिति ने उन्हें इस मुद्दे पर प्रेरित किया। कुछ वर्ष पहले बिमला के पिता की लम्बी बिमारी के बाद मृत्यु हो गई। पिता की देखभाल बिमला का छोटे भाई करता था जिसने उनके इलाज के लिए काफ़ी कर्ज़ लिया हुआ था। 2011 के शुरु मे बिमला के बड़े भाई ने पैतृक सम्पत्ति को बेचने की प्रक्रिया शुरु कर दी। बड़े भाई ने अपने पांच भाई बहनों को इस बारे मे कुछ नहीं बताया। बिमला को जब इस बारे मे पता चला तो उन्होंने भाई से पूछा, परन्तु उसने उन्हें धमकी दी और गांव के सरपंच के साथ मिली भगत कर धड़ल्ले से चारों बहनों का हिस्सा हड़पने की जुगत मे लग गया। बिमला ने तहसील मे बात रखी, वहां उन्हें पैतृक सम्पत्ति मे हिस्सा नहीं लेने की सलाह दी गई। किन्तु बिमला की दृढ़ता व लगन से चारों बहनों को सम्पत्ति में जायज़ हिस्सा मिला। बहनों ने अपनी सम्पत्ति का हिस्सा अपने छोटे भाई को दे दिया। बिमला के लिये, सम्पत्ति में बराबर के अधिकार की लड़ाई एक सिद्धांत के लिये थी न की सम्पत्ति के लालच की। तब से बिमला ने कई महिलाओं की सहायता की है सम्पत्ति में जायज़ हक़ लेने के लिये।

Bimla, of Hudera village in Ratangarh block, is a tireless campaigner for women's right to property. A family situation initiated her into the cause. Some years back Bimla's father died after prolonged illness. The father was cared for by her younger brother who had also incurred a large debt for medical care. In early 2011 Bimla's older brother started the process for disposing off the ancestral property. He did not take his five siblings into confidence. Upon hearing of it Bimla confronted her brother, but he threatened her with dire consequences and with the help of village Sarpanch he brazenly tried to appropriate the share of all four sisters. Bimla approached the tehsil court; there she was dissuaded from claiming share in ancestral property. But Bimla's perseverance & persistent efforts got all four sisters their fair share in property. The sisters then gifted their share of property to their younger brother. For Bimla "the fight for equal share in property was a matter of principle rather than greed for property". Since then Bimla has assisted many women in getting their fair & just share in property.

हमेशा कोई रास्ता होता है

सुजानगढ़ ब्लाक के रूपेली गांव की चुकी व सम्पू ने अपने महिला संगठन की अध्यक्षा सरोज से आग्रह किया कि वह उन्हें मकान के लिये अनुदान दिलवाने मे मदद् करें। 2011 की एक ग्राम सभा मे सरोज ने प्रस्ताव रखा इन दोनों महिलाओं को इन्दिरा आवास योजना के तहत आवास की सुविधा दिलवाने के लिये। सरपंच ने प्रस्ताव लेने से मना कर दिया यह कह कर कि पंचायत रिकार्ड के अनुसार इन दोनों महिलाओं ने यह सुविधा ले रखी है। यह तीनों महिलाओं के लिये एक खबर थी क्योंकि असल में चुकी व सम्पू को कभी किसी भी जन स्कीम से आवास के लिये मदद् नहीं मिली थी। सरोज ने तुरन्त सूचना के अधिकार कानून के तहत दी गई आवास सुविधा व उससे सम्बधिंत अधिकारीयों के बारे मे जानकारी मांगी। जानकारी की अर्ज़ी मिलते ही सरपंच ने सरोज से सम्पर्क किया और बताया कि यह धोखाधड़ी पुराने सरपंच के कार्यकाल के दौरान हुई थी व उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है। उसने सरोज से सूचना की अर्ज़ी वापस लेने का आग्रह किया व वादा किया कि वह चुकी व सम्पू को राज्य सरकार की एक अन्य जन स्कीम से आवास के लिये अनुदान दिलवायेगा। कुछ ही महिनों के अन्दर चुकी व सम्पू को आवास स्कीम से सहायता मिल गई और तब से सरोज व्यस्त है अन्य ज़रूरतमंद महिलाओं को आवास सुविधा दिलवाने मे।

Chuki & Sampu of village Rupeli requested Saroj, leader of their women's group, to assist them in getting a housing grant. During a Gram Sabha in 2011 Saroj forwarded a proposal seeking housing for the two under the public scheme of Indira Awas Yojna. Sarpanch did not accept the proposal and informed her that as per the records the two women have already availed of the benefit. This was news to the three women as Chuki & Sampu in reality had never received any support from any public scheme for housing. Saroj immediately filed an application under Right to Information Act seeking information on the details of the benefit's award and officials involved in the matter. Upon receiving the application Sarpanch contacted Saroj and explained that the fraud was perpetrated during the previous Sarpanch's period in office and he had no inkling of it. He requested Saroj to with draw the application and offered to get Chuki & Sampu housing grant from another public scheme sponsored by the state government. In few months time Chuki & Sampu received the support for housing as per the set norms and Saroj is since then busy in ensuring that women in need of housing support receive it.

There is always a way

पायली गांव की मुन्नी ने ठानी मीरा की मदद् करने के लिये जो अपने आवास अनुदान की दूसरी किश्त पाने के लिये दो साल से संघर्ष कर रही थी। मीरा का मकान अधूरा पड़ा हुआ था और पंचायत पर उसकी गुहार का कोई असर नहीं हो रहा था। मुन्नी ने अपने स्कूली बच्चों की मदद् से सूचना के अधिकार कानून के तहत ब्लाक आफ़िस मे अर्ज़ी दी यह जानने के लिये कि मीरा के आवास अनुदान की दूसरी किश्त की स्थिति क्या है। इसके तुरन्त बाद सरपंच ने उनसे अर्ज़ी वापस लेने का आग्रह किया और अगले दिन ही बकाया राशि के भुगतान का आश्वासन भी दिया। अगले दिन सुबह बैंक मे मैनेजर ने मीरा को 17,500 रुपये दिये। मुन्नी ने 25,000 की पूरी किश्त मांगी तो मैनेजर ने उन्हें तीन दिन में आने को कहा। एक हफ़्ते बाद भी जब मीरा को बकाया भुगतान नहीं मिला तब दोनों फ़िर बैंक गए और इस बार मैनेजर को मीरा की पासबुक में दूसरी किश्त की राशि दर्ज करने को कहा। यह सुनते ही मैनेजर ने बकाया राशि दी व पासबुक में दूसरी किश्त पुरानी तारीख़ में दर्ज की। मुन्नी ने वहां इसका विराध नहीं किया परन्तु गांव पहुंचते ही औरों को यह बात बताई, ख़ास तौर पर उन सात परिवारों को जो लम्बे समय से स्वच्छता स्कीम के तहत अनुदान की किश्त का इंतज़ार कर रहे थे। दो दिन के अंदर ही सातों परिवारों को बकाया राशि मिल गई। अब, मुन्नी लगी हुई है अति निर्धन परिवारों के लिये सस्ते अन्न योजना कार्यक्रम मे व्याप्त भाई भतीजावाद को ख़त्म करने मे।

Munni of village Paayli decided to help Meera who for two years was struggling to get second installment of housing grant. Meera's house was lying incomplete and entreaties with the Panchayat had no effect. Munni, with the help of her school going children filed an application at block office under Right to Information Act seeking information on the status of Meera's second installment. Soon the village Sarpanch requested them to withdraw the application and assured payment the very next day. Next morning at the bank the manager gave Meera Rs.17,500. Munni asked for the full installment of Rs.25,000 but the manager asked them to come in three days time. When even after a week Meera did not receive the balance payment the two again went to the bank and this time asked the manager to enter the second installment amount in Meera's pass book. Immediately, the manager gave the remaining amount and updated the pass book in a back date. Munni decided not to protest there but upon reaching the village she told others about it, especially those seven families who had been waiting since long for their grant installments under sanitation scheme. Within couple of days the seven families received their due. Now, Munni is engaged in rooting out nepotism that is pervasive in the subsidized food program for the poorest of poor families.

बेटियों के लिये भी शिक्षा

माना जाता है कि शिक्षा हमेशा अंधेरे से उजाले की तरफ़ ले जाती है। बेटियों के मामले में यह बात बिलकुल सच है। राजस्थान का रेगिस्तान वाला भाग भारत मे शिक्षा के अति पिछड़े क्षेत्रों में से है और यहां की सामंतवादी समाजिक व्यवस्था जो पितृसत्ता के कट्टर नियमों से बंधी है लड़कियों मे शिक्षा को प्रोत्साहित नहीं करती। कुछ वर्षों से स्वावलम्बिनियां क्षेत्र के गांवो व स्कूलों में लड़कियों की शिक्षा के लिये अनुकूल व समर्थक वातावरण बना कर उनकी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के प्रयास की अगुवाई कर रहीं हैं। क्षेत्र मे एक मिसाल कायम करते हुए SCRIA द्वारा प्रोत्साहित महिला संगठनों की सभी सदस्याऐं अपनी स्कूली उम्र की बेटियों को स्कूल भेज रही हैं। 206 गांवों में 382 महिला संगठनों की सदस्याऐं अपने अपने गांव में स्कूल छोड़ी हुई लड़कियों के परिवार वालों को निरंतर प्रोत्साहित करती हैं उन्हें दुबारा स्कूल में दाखिला दिलाने के लिये।

स्वावलम्बिनियां पहल कर रही हैं स्कूल प्रबंधन कमेटियों को सक्रिय बनाने के लिये, जिन स्कूलों मे लम्बे समय से अध्यापक नहीं है वहां अध्यापकों की नियुक्ति करवाने में, अध्यापकों की नियमित हाज़री सुनिश्चित करके, स्कूलों में दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता पर नज़र रख के, स्कूलों में दिये जाने वाले खाने का समय समय पर निरीक्षण व सम्बंधित मुद्दों का निपटान कर और लड़कियों के लिये स्कूलों मे अलग शौचालयों का निर्माण व रखरखाव में। बच्चों, लड़कियां व लड़के दोनों, की सुरक्षा भी शिक्षा का एक पहलू है जिस पर स्वावलम्बिनियां ध्यान देती हैं व इन्होंने दर्जन भर स्कूलों में अध्यापकों व अन्य लोगों को अशोभनीय व्यवहार के लिये फ़टकार लगाई है। ये नियमित रूप से स्कूल से जुड़े मुद्दों को ग्राम सभाओं में उठाती हैं और अभिभावकों, पंचायतों, अध्यापकों व शिक्षा बोर्ड के अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करती हैं। स्वावलम्बिनियां मानती हैं कि समानता, गौरव व न्याय के साथ शिक्षा भी अति आवश्यक है क्योंकि बिना शिक्षा के समानता, गौरव व न्याय बनाए रखना मुश्किल है, खासतौर पर महिलाओं के संदर्भ में।

Education for daughters too

Education has long been considered as a movement from darkness to light. This cannot be truer in the case of girls. The desert region of Rajasthan is one of India's most educationally challenged regions and the largely feudal social order bound by rigid rules of patriarchy is not conducive to promoting girls' education. For some years Swavlambinis' have been spearheading a mission to promote education of girls by fostering an enabling environment in the villages & in the schools. Setting an example, all members of women groups facilitated by SCRIA are sending their daughters of school going age to school. In 206 villages members of 382 women groups regularly motivate families of girls who dropout from school for their reenrollment in school. Swavlambinis have been in the forefront for activating school management committees, in getting teachers appointed in schools where there have been none for long, ensuring teachers' regular attendance in school, keeping an eye on the quality of education imparted, monitoring mid day meals in schools & resolving resultant issues and in the construction & maintenance of separate toilets for girls in schools. Safety & security of children, both girls & boys, is another aspect of education that Swavlambinis are concerned about and in dozens of schools have ensured that improper behavior by teachers & others is censured. They also regularly raise school related issues in Gram Sabhas and engage parents, Panchayats, school staff & officials of education board. Swavlambinis firmly believe that along with equality, dignity & justice education is most important because without education equality, dignity & justice cannot be maintained, especially in the case of women.

शराबखोरी अब हम सहेंगी न

गांव बैनाथा में महिला संगठन की मासिक मीटिंग के दौरान ऊमा ने शराब को मुफ़्त घर पहुंचाने के चलन से बढ़ती शराबखोरी का मुद्दा उठाया। सहमत होते हुए सदस्याओं ने बताया कि कैसे इससे उनके घरों व पड़ोस मे माहौल खराब हो रहा है। इस बात पर भी चिंता जताई कि पानी की टंकी के पास शराब के ठेके की वजह से पानी लेने वाली महिलाओं व लड़कियों को हमेशा नशे मे धुत लोगों की फ़बतीयां व अन्य बदतमीज़ियां झेलनी पड़ती हैं। मीटिंग के उपरांत महिलाओं ने अपनी चिंता से सरपंच प्रेम सिंह को अवगत किया। वह उनकी बात से सहमत था परन्तु शराब माफ़िया के आगे अकेले कुछ भी करने में सरपंच ने अपनी असमर्थता बता दी। इस पर सबने मिल कर तय किया कि एक हफ़्ते बाद गांव की एक असाधारण बैठक बुलाई जाए। एक सौ से अधिक परिवारों ने इस बैठक मे हिस्सा लिया, जिसमे करीब 35 परिवारों का प्रतिनिधित्व महिलाऐं कर रहीं थी। काफ़ी चर्चा के बाद तय हुआ कि शराब पीने वाले व बेचने वाले, दोनों पर लगाम लगाई जाएगी, गांव में पूर्ण रूप से शराब बंदी होगी, कोई भी नशे मे अगर मिलेगा तो उस पर 11000 रुपये का जुर्माना होगा ओर शराबी की सूचना देने पर जुर्माने की राशी से 5000 रुपये का इनाम दिया जाएगा। इसके बाद एक कमेटी का गठन हुआ निर्णय को लागू करने के लिये, जुर्माना वसूलने व उस राशी को विकास कार्यों में खर्च करने के लिये। गांव के निर्णय की प्रति स्थानीय पुलिस को भी भेजी गई, जिन्होंने निर्णय का पूर्ण समर्थन किया। ऊमा अब ग्राम वासियों को अन्य पहलों के लिये सक्रिय करने में व्यस्त है।

In the monthly meeting of women's group in village Bainatha, Uma raised the issue of rampant alcohol abuse fuelled by "free home delivery". Agreeing, members shared how it was vitiating the atmosphere in their homes & neighborhood. There was also concern about the vend next to water supply tank due to which all women fetching water had to face lewd jeering & catcalls of the drunk and sleazy men. After the meeting they shared their concern with village Sarpanch Prem Singh. He agreed with them but expressed his inability to rein in the alcohol mafia. They decided to hold a special village meeting on the issue a week later. More than 100 families attended the meeting; nearly 35 were represented by women. After much discussion it was decided to rein in both the alcohol sellers & consumers, the village was declared a no alcohol zone, anyone found drunk was to be fined Rs.11,000 and those reporting on a drunk were to be awarded with Rs.5,000 from the fine. A committee was formed to enforce the decision, collect fine & utilize it for development initiatives in the village. A copy of the village's decision was sent to the police who whole heartedly supported it. Uma is now engaged in activating citizens' for other initiatives in her village.

Now we will not tolerate drunkenness

सुजानगढ़ ब्लाक के देवानी बीचली गांव में शराब का ठेका ठीक गांव के बीच मे था व रात को 8 बजे बंद होने के बजाय वह आधी रात के बाद तक खुला रहता था। ठेके के आस पास नशे मे धुत लोग रोज़ देर रात तक फ़साद करते। गांव के ज़्यादातर लोग इस सब से तंग व नाराज़ थे पर स्थिति बदलने में असहाय हो रहे थे। गीता ने शराब ठेकेदार को ठेका गांव की सीमा पर लगाने को कहा। बार बार आग्रह करने पर भी वह नहीं माना। गीता ने फ़िर गांव के सरपंच को शिकायत की, सरपंच ने गीता को कोई आश्वासन तो नहीं दिया पर ठेकेदार को इस बारे मे सूचना दे दी। गीता को सबक सिखाने के लिये अगस्त 2011 में ठेकेदार ने उसके बेटे को बुरी तरह पीटा। गीता ने छापर पुलिस थाने मे श्किायत दर्ज कराई व गांव के बीच मे बने शराब के ठेके को सब समस्याओं की जड़ बताया। काफ़ी समय तक टाल मटोल करने के बाद पुलिस ने नवम्बर में गांव की बैठक बुलाई जिसमे ज़्यादातर लोगों ने ठेके के स्थान पर विरोध जताया। कुछ समय बाद पुलिस ने ठेका गांव के बीच मे से उठवाकर उसे गांव की सीमा से दो किलोमीटर दूर करवाया और ठेकेदार को हिदायत दी कि वह ठेका समय पर बंद करे अन्यथा उस पर जुर्माना होगा व ठेके का परमिट रद्द कर दिया जाएगा। इसके बाद से गांव मे शांति है। गीता अब व्यस्त है जन सेवाओं, जन कार्यक्रमों व न्याय से सम्बंधित मुद्दों में।

Liquor vend in village Devaani Bichli of Sujangarh block was in the middle of the village and was kept open till very late at night even though it was supposed to close by 8 pm. Drunken brawls in the vicinity were regular & often continued till late at night. Most village residents were fed up & angry with the situation but were unable to change it. Geeta requested vend contractor to shift vend to the fringe of the village. Inspite of repeated requests & entreaties the vend contractor refused to reason. Geeta then asked the village Sarpanch to intervene, but he gave no assurance and informed the vend contractor about Geeta's demand. To dissuade Geeta from her quest, in August 2011 the contractor beat her son. Geeta lodged a complaint at Chapar police station and cited the centrally located liquor vend as the root of all troubles. After much dawdling the police called a village meeting in November where most of the residents present emphatically voiced their protest against vend's location. Soon the police got vend shifted from the very centre of the village to two kilometers beyond the village boundary and warned the contractor to close it on specified times to avoid cancellation of vend license and penalty. Since then there is peace in village. Geeta is actively engaged in issues regarding the delivery of public services - programs & justice.

सक्रिय मंच

SCRIA गांवों मे स्वंय के द्वारा व विभिन्न सरकारी काय्रक्रमों द्वारा बनाए गए महिला संगठनों का संघ तैयार करता है। ग्राम स्तरीय महिला संगठनों का यह संघ सक्रिय मंच कहलाता है। मंच अपने अपने गांवों मे गंभीर व अति आवश्यक मुद्दों की पहचान कर, उनके निपटान के लिये रणनीति तय करके उचित कार्यवाही करता है। स्थानीय पहलों मे मंच घटक वर्द्धन का कार्य करता है। रतनगढ़ ब्लाक के जैतासर गांव मे तलाब छंटाई का काम एक जन स्कीम के तहत हो रहा था। मज़दूरी के भुगतान के दौरान सज्जन ने देखा कि जिन महिलाओं ने एक दिन भी कभी तलाब छंटाई का काम नहीं किया उन्हें मज़दूरी का पूरा भुगतान किया जा रहा है जबकि उन्हें व 21 अन्य महिलाओं, जिन्होंने पूरा काम किया था, को कम भुगतान मिल रहा था। कार्य सुपरवाईज़र से सज्जन ने जब इसके बारे में पूछा तो उसने दो टूक कहा कि जो महिला उसे मज़दूरी मे से हिस्सा देगी उसे वह पूरा पैसा देगा चाहे उसने काम किया हो या नहीं। सज्जन ने जब यह बात गांव के सरपंच के सामने रखी तो सरपंच ने भुगतान को जायज़ बताते हुए कहा कि भुगतान काम के सरकारी रिकार्ड के अनुसार है। सज्जन और अन्य महिलाऐं फिर ब्लाक स्तरीय अधिकारियों के पास गईं पर उन्होंने भी सरकारी रिकार्ड का हवाला देते हुए बोला कि वह 22 महिलाऐं जितना बता रहीं है उससे कम काम उन्होंने किया है। इस व्यापक भ्रष्टाचार से क्रोधित महिलाओं ने इसके खिलाफ़ लामबंद होने का निश्चय किया। इन्होंने सात गांवो के सक्रिय मंचों को भी इसकी सूचना दी। 11 जुलाई 2012 को 71 महिलाओं ने चुरु जिला मुख्यालय मे ज़ोरदार विरोध प्रदर्शन किया। ज़िला परिषद प्रमुख विरोध करती महिलाओं से मिले, उनकी शिकायत समझी और सम्बंधित अधिकारियों को तुरन्त कार्यवाही का निर्देश दिया। अगले दिन अधिकारियों की टीम गांव पहुंची, स्थिति का मूल्यांकन किया व मज़दूरी के जायज़ भुगतान का आश्वासन दिया। 2012 के आखिर में फ़िर से पुराने हालात बन रहे हैं परन्तु इस बार सज्जन और मंच के अन्य सदस्य तैयार हैं व पक्का इरादा किये हुए हैं कि अगर उन्हें अपने हक़ की लड़ाई के लिये जयपुर भी जाना पड़े तो जाऐंगे।

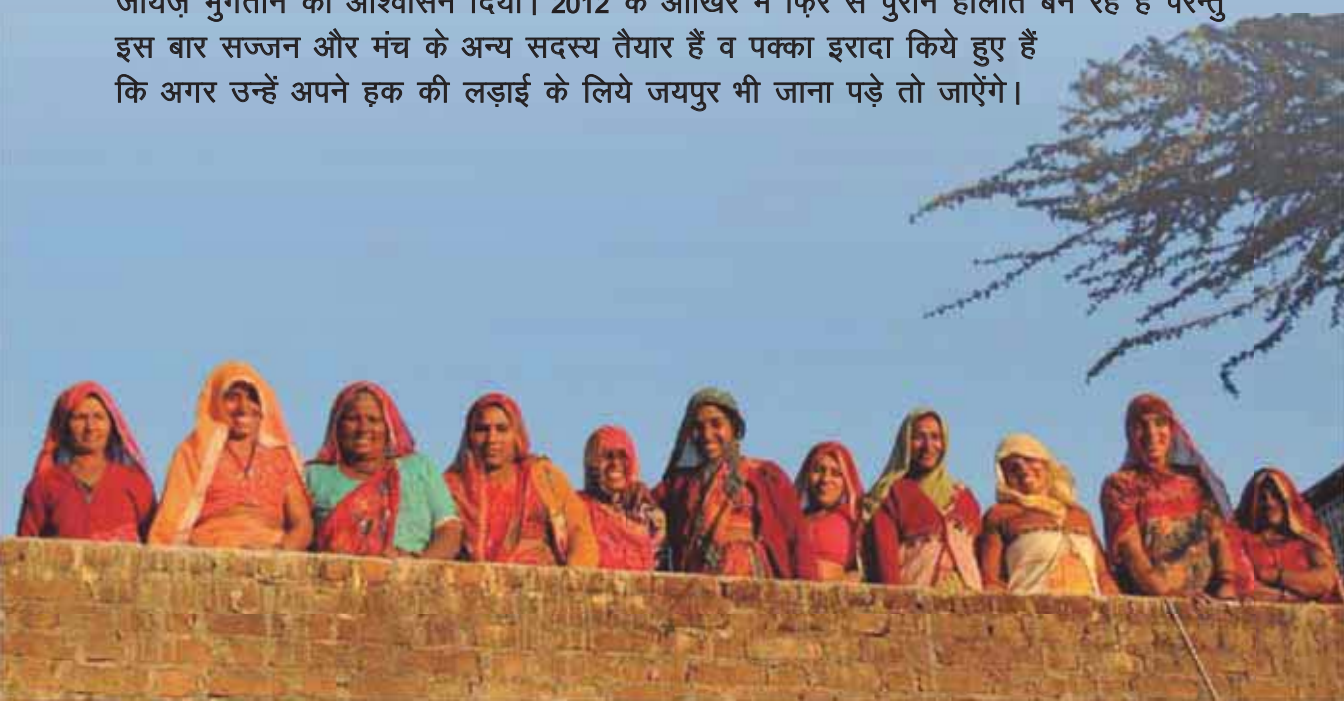

Sakriya Manch

SCRIA facilitates networking of women groups promoted by it or by various government programs in the villages. This initiative for intra village networking among women's groups is called Sakriya Manch, literally meaning active platform. The Manch identifies critical issues in their respective villages, forms a strategy to deal with it and takes action. Manch acts as a 'force multiplier' in local initiatives. In village Jaitasar of Ratangarh block work on desilting pond was undergoing. This was being done through a public funded scheme. During periodic payments Sajjan noted that women who did not even work at the site were paid in full while she & 21 others who had worked regularly were paid partial wages. When she enquired about it the site supervisor blandly told her that only those women get full payment who pay him part of their wages irrespective of the work done. She raised the matter with the Sarpanch who justified the payment which according to him was done as per the official work record of concerned individuals. Sajjan & others then approached the block officials but they too cited the official records which showed that the 22 women had done less work than they were claiming. Furious with the systemic cheating the Manch members decided to hold a protest demonstration at district headquarters. They informed Manch members in seven other villages also. On July 11, 2012, 71 women staged a vociferous sit-in at Churu district headquarters. Zilla Parishad chairperson met the protesting women, listened to their woes & immediately ordered concerned officials to take action. A team of officials visited the village, took stock of the situation & ensured full payment to all deserving. In late 2012 the same situation is developing but this time Sajjan and other Manch members are ready and determined to take the fight to Jaipur, if need be.

शक्ति परिषद
Shakti Parishad

डर के नहीं जीयेंगे

सितम्बर 2010 मे श्री डूगंरगढ़ ब्लाक के ढिगारिया गांव मे एक 11 वर्ष की बच्ची का बलात्कार हुआ पर गांव के लोगों ने आरोपी के खिलाफ सामाजिक कार्यवाही का वादा करते हुए पीड़िता के परिवार को पुलिस मे शिकायत दर्ज करने से रोक दिया। जब एक हफ़्ते बाद तक भी दुष्कर्मी के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई तब पीड़िता की मां ने शक्ति परिषद से सहायता मांगी। परिषद की दो सदस्याऐं पीड़िता की मां के साथ पुलिस थाने गईं परन्तु पुलिस ने केस दर्ज करने से मना कर दिया। परिषद सदस्या सुमन ने तुरन्त पुलिस अधीक्षक को फ़ोन करके मामले से अवगत किया। पुलिस अधीक्षक ने थानेदार को तुरन्त कार्यवाही के आदेश दिये। मजबूरी मे स्थानीय पुलिस ने केस तो दर्ज कर लिया पर कानूनी रूप से ज़रूरी डाक्टरी जांच नहीं करवाई। हफ़्ते भर की पुलिस निष्क्रियता के बाद शक्ति परिषद की 19 सदस्याओं ने 37 अन्य महिलाओं के साथ थाने मे ज़ोरदार विरोध प्रदर्शन किया, इन्होने इसकी सूचना बीकानेर क्षेत्र के पुलिस महाअधीक्षक के साथ टेलिविज़न व अखबारों के स्थानीय पत्रकारों को भी दी, जो बड़ी तादाद मे वहां पहुंचे। चौरफ़ा दबाव मे पुलिस ने कानून के अनुसार कार्यवाही कर दुष्कर्मी को गिरफ्तार किया।

Will not live in fear

In September 2010 an 11 year old girl was raped in village Dhigariya of Sri Dungargarh block but people in the village discouraged the girl's family from filing a police complaint, promising social action against the perpetrator who was known to all. When no action was taken against the culprit even after a week the girl's mother approached Shakti Parishad for help. Two Parishad members accompanied the victim's family to police station but the police refused to file an FIR. Parishad member Suman then phoned the Superintendent of Police and narrated the matter. The SP instructed the concerned official to register the case right away. Reluctantly, the local police registered the case but did not do any medico legal follow up as mandated in such cases. After a week of police inaction 19 members of Shakti Parishad along with 37 other women staged a protest demonstration at the police station and informed the Senior Superintendent of Police for Bikaner circle. Local media, both print & television, was alerted & reached the place in full force. The intense pressure forced the police to act as per law & arrest the perpetrator.

स्वयंसेवी
Volunteers

SCRIA की विभिन्न पहलों मे सफ़लता का राज़ हैं स्वयंसेवी – पहुंच के क्षेत्र से वो महिलाऐं व पुरुष जो स्वेच्छा से सामुदायिक पहलों जैसे अभियान, चेतनाशील कार्यक्रम, सामूहिक सिफ़ारिश, हिंसा पीड़ित महिला को सहयोग, सामूहिक संपत्ति विकास व स्थानीय पहल मे सांझेदार होते हैं। नियमित योगदान देने वाले करीब 7500 स्वयंसेवी हैं जिनमे से 88.5 प्रतिशत महिलाऐं हैं व 11.5% पुरुष। इनके अतिरिक्त 5000 अन्य महिलाऐं अपनी भागेदारी देती हैं शासन व विकास की प्रक्रियाओं को सम्मिलित व जवाबदेही और जन सेवाओं व कार्यक्रमों को गांव, ब्लाक व जिला के स्तरों पर प्रभावी बनाने के लिये। स्वयंसेवी वर्ष में औसतन 7000 कार्य दिवस का योगदान देते हैं, इस योगदान को जब न्यूनतम मज़दूरी से जोड़ते है तो इस का मूल्य 12 लाख रूपये है!

स्वयंसेवियों की विशिष्टता

★ लगभग 90% स्वयंसेवी संस्था द्वारा गठित महिला संगठनों की सदस्याऐं या उनके परिवार के सदस्य हैं ★ 64% स्वयंसेवी 18 से 45 वर्ष के हैं व 35% 46 से 60 वर्ष के हैं ★ 62% स्वयंसेवी व्यावहारिक रूप से शिक्षित हैं व 38% औपचारिक रूप से शिक्षित हैं ★ 71% स्वयंसेवियों का स्वरोज़गार है, 25% किसान हैं, 2% विद्यार्थी हैं व 2% बेरोज़गार

SCRIA संस्था आभार के साथ 12000 से ऊपर स्वयंसेवियों का सहयोग स्वीकार करती है जिनके निस्वार्थ योगदान के बिना लक्ष्य तक पहुंचना संभव नहीं हैं

A significant share of success in SCRIA's various initiatives is due to volunteers, women & men, from outreach region who willingly partner in community initiatives like campaigns, community sensitization & motivation, collective advocacy, support to women victims of violence, community asset development and in local initiatives. Nearly 7500 community volunteers are regularly active of which 88.5% are women and 11.5% are men. Another 5000 women participate in local initiatives related to inclusiveness & accountability in governance and development processes and for making public services & programs functional at village, block & district level. On an average the volunteers contribute over 7000 workdays in a year which when calculated as per the statutory minimum wage amounts to more than 1.2 million rupees!

Volunteers' profile

★ Nearly 90% volunteers are members of SCRIA facilitated women groups or their family members ★ 64% of the volunteers are in the age group of 18 to 45 yrs, 35% in 46 to 60 yrs ★ 62% of the volunteers are functionally literate while 38% are literate ★ 71% of the volunteers are self employed, 25% are farmers, 2% are students & 2% unemployed

SCRIA gratefully acknowledges the support of more than 12000 community volunteers without whose selfless devotion the mission would be incomplete

खुद को बदल

ढाणी कानसूजिया गांव की भंवरी जिले की ऐसी पहली महिला है जिसने अपने गांव व आसपास के गांवो से दूध एकत्र कर शहर में बेचना शुरु किया था। यह धंधा इन्होनें 2005 में दूधिया से परेशान होकर शुरु किया। दूधिया इनसे बहुत सस्ते में दूध लेकर उसे ज़्यादा दाम पर शहर में बेचता था और दूध ही भंवरी की कमाई का एकमात्र ज़रिया था जिससे वह अपने लम्बे समय से बिमार बच्चे का इलाज कराती थी। एक रूढ़ीवादी पितृसत्ता वाले समाज में साहसिक पहल करते हुए इन्होनें गांव की अन्य महिलाओं को रज़ामंद किया कि वह दूध इन्हें दें और वादा किया कि वह दूधिया से ज़्यादा दाम देंगी। कुछ ही समय में भंवरी 15 घरों से प्रतिदिन 100 लीटर दूध लेकर शहर में बेचने लगीं। इस अनुभव ने इन्हें हिम्मत दी ओर वह अन्य महिलाओं को भी प्रोत्साहित करने लगी कि वह अपने भविष्य को संवारे। अपने गांव मे इन्होने बीड़ा उठाया लम्बित समस्याओं को सुलझााने का जैसे बदहाल तलाब, सार्वजनिक कार्यों के हिसाब में हेरा फ़ेरी, नियमानुसार कार्य नहीं करने वाली आंगनवाड़ी, कभी आयोजित नहीं होने वाली ग्राम सभाऐं, महिलाओं को गांव की शासन प्रक्रियाओं से अलग रखने की प्रथा, इत्यादि। महिलाओं को जागृत करने के जुनून ने इन्हें प्रेरित किया SCRIA द्वारा आयोजित विभिन्न सामुदायिक पहलों में योगदान के लिये। सन् 2006 से यह स्वयंसेवी हैं व इन्होनें अब तक 16 अभियानों, जिनमे कुछ पड़ोसी जिलों मे थे, में 70 कार्य दिवसों का योगदान दिया है। कभी इन्हें कई दिनों के लिये घर से जाना भी पड़ता है परन्तु भंवरी इसकी परवाह नहीं करती क्योंकि वह सिर्फ एक कर्तव्यनिष्ठ स्वयंसेवी ही नहीं अपितु एक उत्साही स्वावलम्बिनी भी हैं।

Be the change

Bhanwari of village Dhani Kaansujiya is the first "milk woman" in the district who started to collect milk from her village and other neighboring villages for sale in town. She started this in 2005 after being regularly paid meager amount for the milk the milkman procured while selling the same milk at a much higher price. The income from milk was Bhanwari's sole means to provide treatment for her critically ill child. Taking a bold step in a rigid patriarchal society she convinced other women in her village to give her the milk for sale in town & guaranteed better returns than the milkman. Bhanwari soon started procuring 100 liters of milk every day from 15 household of her village. The experience emboldened her & she began to encourage other women to rewrite their destinies. In her village she took up cudgels to find solutions for vexing issues like the broken down village pond, fudging of payment in public works, Gram Sabhas that were never held, non functioning Anganwaadi, exclusion of women from village governance processes, etc.. Her zeal has led her to volunteer for various community initiatives facilitated by SCRIA. Since 2006 she has been active in 16 campaigns contributing over 70 workdays. At times she is away from her home for days, but this does not bother her as Bhanwari is not only a conscientious volunteer but an ardent Swavlambini too.

सामाजिक बंदिशों पर सेंध

सामंतवादी व रूढ़ीवादी पितृसत्ता वाले समाज में महिलाऐं जो कुछ साल पहले तक यह भी नहीं जानती थीं कि उनके घर या गांव से बाहर क्या हो रहा है और जिनमें से ज़्यादातर कभी स्कूल भी नहीं गईं वह उल्लेखनीय कार्य कर रहीं हैं एक निस्वार्थ धर्मयुद्ध के द्वारा महिलाओं के समानता, न्याय, अधिकार व हक के लिये। यह महिलाऐं हैं स्वावलम्बिनियां और इन्होंने शुरु किया है तोड़ना अपरिवर्तनीय रुकावटों को, चुनौती दी है सामाजिक बंदिशों को और लिखना शुरु किया है सामाजिक विधि संहिता में कि एक महिला क्या कर सकती है।

- करीब 10,000 महिलाऐं अपने सामाजिक, राजनैतिक, विकासात्मक व कानूनी अधिकार और हक के लिये SCRIA के पहुंच के क्षेत्र के 300 गांवों में सक्रियता से क्रियाशील हैं
- जनवरी 2010 से दिसम्बर 2012 के बीच स्वावलम्बिनीयों ने 2566 पहलें की हैं महिलाओं के सामाजिक, राजनैतिक, विकासात्मक व कानूनी अधिकारों व हक के लिये
- विकासात्मक प्रक्रियाओं, कानूनों व जन सेवाओं के क्रियान्वयन में लिंग संवेदनशीलता लाने के लिये 47 पहलें क्षेत्रिय स्तर पर हैं
- 5,000 से अधिक महिलाऐं गांव स्तरीय निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से जुड़ी हैं
- कम से कम 186 गांवों मे स्वावलम्बिनीयां सक्रियता से सामाजिक, राजनैतिक, विकासात्मक व कानूनी प्रक्रियाओं में महिलाओं का सम्मिलन सुनिश्चित कर रही हैं
- करीब 200 गांवों में महिलाओं द्वारा स्थानीय पहलों की वजह से जन सुविधाओं व सेवाओं में गुणनात्मक व संख्यात्मक बढ़ोतरी हुई है
- SCRIA द्वारा प्रोत्साहित महिला संगठनों की 100% सदस्याऐं ग्राम साभाओं में भाग ले रही हैं व औसतन 4 मुद्दे उठा रही हैं हर पंचायत की हर सभा मे
- ग्राम साभाओं मे महिलाओं द्वारा उठाए गए 55% मुद्दे कानून लागू करने व जन सेवाओं को प्रदान करने में लिंग संवेदनशीलता लाने के लिये होते हैं
- 9000 से अधिक महिलाऐं अपने खुद के सूक्षम उद्यमों को संभाल रही हैं
- सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण यह है कि महिलाओं ने शुरु कर दिया है अपने आप और अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना कि वह पितृसत्ता से ग्रस्त समाज मे अर्थपूर्ण व महत्वपूर्ण बदलावों की अग्रदूत हो सकती हैं

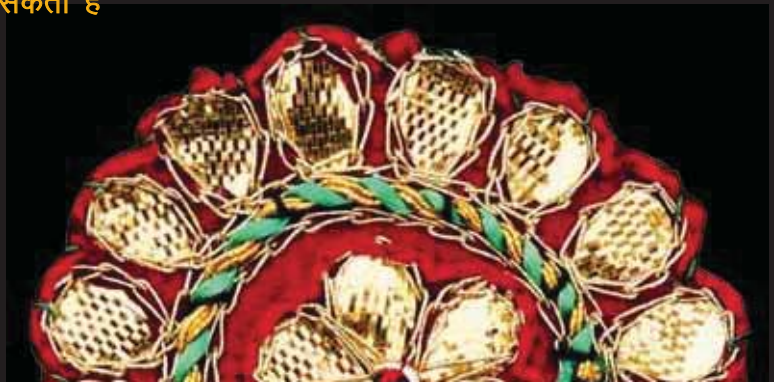

Cracking social taboos

In a nearly feudal and rigid patriarchal society women who till few years back had never known what was happening beyond their homestead or village and most of whom who have never been to a school are accomplishing remarkable feats by their selfless & tireless crusade for women's equality, justice, rights & entitlements. These women are Swavlambinis and they have started breaking inviolable barriers, challenging social taboos and rewriting social codes about what a woman can do.

- Nearly 10,000 women in more than 300 outreach villages of SCRIA are active in negotiating their social, political, developmental, legal rights & entitlements
- Swavlambinis undertook 2566 initiatives between January 2010 & December 2012 for social, political, developmental & legal entitlements of women
- 47 inter village or regional initiatives undertaken for gender sensitive implementation of developmental processes, laws & delivery of public services
- More than 5000 women are involved in decision making processes at village level
- In at least 186 villages Swavlambinis are actively monitoring inclusiveness in social, political, legal & developmental processes
- In nearly 200 villages there is qualitative & quantitative increase in public facilities & services due to local initiatives by women
- 100% members of SCRIA facilitated women groups are attending Gram Sabhas & on an average raising 4 issues per Sabha per Panchayat
- 55% issues raised by women in Gram Sabhas are related to gender sensitive enforcement of laws & delivery of public services
- More than 9000 women are managing self owned micro enterprises
- Most of all women have started believing in themselves and in their capacities to be harbingers of meaningful vibrant changes in a patriarchal society

कैसे स्वावलम्बिनी बनें

बिलकुल भी कठिन नहीं है स्वावलम्बिनी होना। ईमानदारी से थोड़ा आत्म मंथन करें, व्यवहार व विचार में सकारात्मक बदलाव और दृढ़ निश्चय के साथ कोई भी महिला स्वावलम्बिनी बन सकती है। शुरुआत करने के लिये नीचे दिये गए कुछ साधारण कदम लें।

- प्रधानता वाली संस्कृति को स्वीकार नहीं करें, मांग करें व अपनाऐं समानता के ऐसे सिद्धांत जो रंग, जाति, क्षेत्र, धर्म व लिंग मे भेदभाव नहीं करे। किसी भी प्रकार की असमानता को स्वीकार नहीं करें या बढ़ाऐं
- आदर करें भिन्न सोच, जीने के विभिन्न तरीकों और जीवन में अन्य विविधता का
- पुरुष विरोधी न बनें, महिलाओं के पक्षधर हों। महिला समानता व गरिमा के लिये सहयोग दें व संघर्ष करें
- महिलाओं की गरिमा, अधिकार, हक व न्याय के लिये खुद पहल करें या स्थानीय, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तरों के प्रयासो में भाग लें
- जो महिलाओं के अधिकार व हक को दबाऐ उसके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाऐं। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक व विकास की प्रक्रियाओं में अपने जायज़ अधिकार व हक लें
- जानकार बनें। शुरुआत करें महिलाओं के मुद्दों, उनके अधिकार व हक और उनको प्रभावित करने वाले कानूनों व कानूनी प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी लेकर
- पुरज़ोर विरोध करें महिलाओं के खिलाफ़ हिंसा वाली संस्कृति का। अपने परिवार में लोगों को महिला बोधक अपशब्द कहने व महिलाओं का मज़ाक उड़ाने और छेड़छाड़ करने से रोकें
- अपने भविष्य को संवारने में भूमिका निभाऐं व दूसरी महिलाओं की मदद् करें उनका भविष्य संवारने में
- सिर्फ घरेलू कार्यों व बच्चों के जनन् तक सीमित न रहें। अपनी पहचान बनाऐं, जीवन में कुछ नया करें
- ऐसी परंपराओं पर सवाल करें जो पुरुष प्रधान वाली संस्कृति को बढ़ावा दे और महिलाओं को सदैव पुरुषों के आधीन रखे
- अपने विचार व सोच दूसरों को भी बताऐं, अखबार या पत्रिकाओं के लिये लेख लिखें
- वोट उस उम्मीदवार को दें जो वादा करे लिंग समानता को प्रोत्साहित करने का और ऐसे कानून, नीति व कार्यक्रम को समर्थन देने का जो महिला व पुरुषों को समान लाभ दे और किसी भी प्रकार की असमानता को न बढ़ाऐ। चुनाव जीतने के बाद अगर वो अपना वादा भूल जाऐ तो उन्हें याद दिलाते रहें

How to be a Swavlambini

It isn't at all arduous or hard to be a Swavlambini. With a bit of honest self introspection, conscious modification in behavior & thoughts and a firm resolve to be a Swavlambini any woman can be one. Make a beginning by taking the following simple steps.

- Reject a culture of domination, demand & practice the tenets of equality that is irrespective of color, caste, region, religion & gender. Refuse to accept and perpetuate inequality in any form
- Respect differing opinions, different ways of life & other diversity in life
- Don't be anti men, be pro women. Support or fight for women's equality & dignity
- Initiate or participate in local, regional or national initiatives for women's dignity, rights, entitlements & justice.
- Raise your voice against anyone trampling over women's rights & entitlements. Seek your rights & fair entitlement in social, political, economic and developmental processes
- Become informed. Start by learning more about women's issues, their rights & entitlements and laws & legal processes affecting them
- Fight against the culture of violence against women. Start by stopping people in your family using women centric swear words and sneering & mocking women in the guise of harmless teasing. Nothing is innocuous & harmless
- Be instrumental in influencing your destiny & help other women initiate change for their betterment
- Do not be just bread makers & child bearers. Carve your own identity, stand up & be counted
- Question cultural or traditional practices that promote a culture of male superiority & domination while reducing women to perpetual subservience
- Share your concerns & views with others – write for newspapers or magazines
- Vote for candidates that promise to promote gender equality & such legislation, policies or programs in all spheres that will benefit women and men equally and by which inequality will not be perpetuated. If after getting elected they forget their promise remind them regularly till they fulfill their promise

महिलाओं को सशक्त करने के लिये किये गए प्रयास

राजस्थान के चुरू जिले के गांवों में महिलाओं को सशक्त करने के लिये संस्था 1999 से विभिन्न पहल सक्रिय रूप से कर रही है।

- पहुंच के गांव 367
- सघन कार्य वाले गांव 265
- कुल महिलाओं तक पहुंच 88530
- कुल पुरुषों तक पहुंच 130560
- कुल महिला संगठन गठित किये 726
- महिला संगठनों में कुल सदस्य 9561
- गांव जिनमे विभिन्न महिला संगठनों का मंच गठित किया है 158
- शक्ति परिषद की शाखाऐं 2
- शक्ति परिषद मे सदस्याऐं 82
- महिला संगठनों द्वारा 2010 से 2012 तक में की गईं स्थानीय पहल 2566

महिला संगठनों के सदस्यों द्वारा स्थानीय पहल नियमित रूप से होती है। महिलाऐं पहल करती हैं शासन में सम्मिलन के लिये, जन सेवाओं व स्कीमों में जवाबदेही के लिये, महिला हिंसा के विरुद्ध, जन संस्थाओं के अर्थपूर्ण संचालन के लिये और सामूहिक संपत्ति व संसाधन के प्रबधंन के लिये

- महिला सशक्तिकरण, लिंग समानता के लिये समर्थक वातावरण व महिलाओं के मुद्वों व विचारों को समाज की मुख्यधारा में लाने के लिये संस्था ने निम्न पहल की हैं

- क्षमता वर्द्धन गतिविधियां
  - कार्यशालाऐं व प्रशिक्षण 1237
  - नागरिक संवाद 41
  - अध्धयन भ्रमण 53
  - अभियान 59
- सूचना का अधिकार के कैम्प 173
- परस्पर मिलन कार्यक्रम 49
- संघ 9
- सामाजिक अंकेक्षण 17 गांव
- लिंग अंकेक्षण 60 गांव
- प्रभाव आंकलन 40 गांव
- शक्ति परिषद द्वारा पहल 116

Efforts facilitated for empowering women

SCRIA has been actively facilitating initiatives for empowering women in the villages of Churu district of Rajasthan since 1999.

- Villages of outreach 367
- Villages of intensive involvement 265
- Total no. of women outreached 88530
- Total no. of men outreached 130560
- Total no. of women groups facilitated 726
- Total members 9561
- Villages where an intra village network of women groups has been facilitated 158
- Chapters of Shakti Parishad – a federation for women victims of violence 2
- Shakti Parishad members 82
- No. of local initiatives undertaken by women groups during 2010 to 2012 2566

Local initiatives by members of women groups are a norm. The local actions are for inclusiveness in governance, accountability in public services & schemes, against gender violence, meaningful functioning of public institutions and for the management of community assets & common resources.

- Various initiatives undertaken by SCRIA for empowering women, creating an enabling environment for gender equality and for promoting gender mainstreaming are

- Capacity building activities
  – workshops/ trainings 1237
  – citizens' dialogues 41
  – study tour 53
  – campaigns 59
- Right to Information camps 173
- Lateral networking events 49
- Federations 9
- Social Audit 17 villages
- Gender Audit 60 villages
- Impact monitoring 40 villages
- Initiatives by Shakti Parishad 116

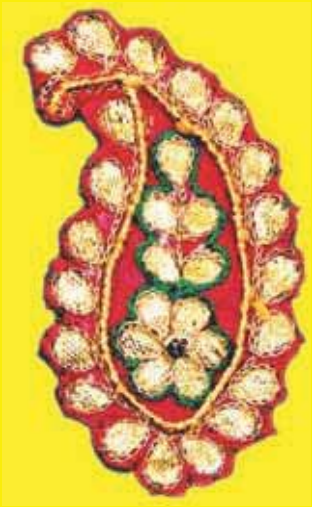

हिन्दी व अंग्रेज़ी मे लेख — सेनू रावत
TEXT IN HINDI & ENGLISH — Senoo Rawat

जानकारी का योगदान — चुरु राजस्थान में SCRIA के पहुंच के क्षेत्र के गांवों की महिलाओं द्वारा, कार्यक्रम टीम देराजसर एवं टीम लीडर बजरंग
INPUTS FROM — Women from SCRIA's outreach villages in Churu Rajasthan, program team at Derajsar & team leader Bajrang

चित्र — सेनू, बजरंग, ईश्वरी
PHOTOGRAPHS — Senoo, Bajrang, Eshwari

प्रारूप — सेनू
LAYOUT — Senoo

प्रकाशित — SCRIA द्वारा
PUBLISHED BY — SCRIA

सहयोग — वेल्टहुंगरहिल्फ और यूरोपियन यूनियन
SUPPORT FROM — Welthungerhilfe & European Union

छपाई — शिवम् सुन्दरम्, नयी दिल्ली
PRINTED AT — Shivam Sundram, New Delhi

दिसम्बर 2012
December 2012

लोगों को जागृत करने के लिये महिला को जागृत करें।
जब वो बढ़ती है तो परिवार बढ़ता है, गांव बढ़ता है, देश बढ़ता है।
जवाहरलाल नेहरू

To awaken people, it is the woman who must be awakened.
Once she is on the move, the family moves,
the village moves, the nation moves.
Jawaharlal Nehru

SCRIA Khori Centre 30 Years In Rural Development
SOCIAL CENTRE FOR RURAL INITIATIVE & ADVANCEMENT
Head Quarter - Khori 123101, District Rewari, Haryana, India
Main Office Rajasthan - Derajsar 331022, Ratangarh, District Churu, Rajasthan, India
http://www.scria.org Email - scriakhori@yahoo.co.in